P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-2) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

कार्यानीतिक प्रबन्ध प्रक्रिया में पर्यावरण का विश्लेषण

आनन्द कुमार सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर,
वाणिज्य संकाय,
शहीद स्मारक राजकीय पी0जी0 कालेज,
यूसुफपुर, मुहम्मदाबाद,
गाजीपुर, भारत

सारांश

पर्यावरण के सूक्ष्म परीक्षण में संगठन के आन्तरिक तथा वाह्य परीक्षण के अन्तर्गत वातावरण में व्याप्त अवसरों तथा खतरों का अध्ययन किया जाता है, और वातावरण के आन्तरिक विश्लेषण में संगठन की शक्ति तथा कमजोरियों का अध्ययन किया जाता है जो यह निश्चित करती है कि प्रत्येक व्यवसायिक संस्था किस सीमा तक व्याप्त अवसरों तथा खतरों का लाभ उठा सकती है। व्यवसाय का शाब्दिक अर्थ है कि "व्यस्त रहने की अवस्था", परन्तु प्रत्येक मानवीय कार्य की व्यस्तता व्यवसाय नहीं हो सकती। व्यवसाय वही मानवीय व्यस्तता है जिसमें आर्थिक कार्य होते हैं और इसका सम्बन्ध वस्तुओं तथा सेवाओं के उत्पादन, विनिमय तथा उपभोग से होता है। अतः व्यवसाय वह आर्थिक क्रिया है जिसके द्वारा वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन तथा वितरण किया जाता है और इसका उद्देश्य मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि करके लाभ कमाना होता है। पर्यावरण का सूक्ष्म परीक्षण केवल एक बार नहीं होता, बल्कि निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, जैसे कि वातावरण में लगातार परिवर्तन होता रहता है, इसलिए कार्यनीतिज्ञ निरंतर इसका विश्लेषण करते हैं तथा समाधान ढूँढते रहते हैं।

मुख्य शब्द : SWOT, परिवर्ती, जनांकिकीय, वाह्य घटक, प्राकृतिक घटक, अपेक्षा, आकांक्षा।

प्रस्तावना

कार्यनीतिक प्रबन्ध प्रक्रिया में दृष्टिकोण, उद्देश्य, लक्ष्य तथा संगठनात्मक उद्देश्यों का निर्धारण करने के बाद वातावरण का सूक्ष्म परीक्षण (Scanning) किया जाता है, जिसके अन्तर्गत सभी संगठन एक उप प्रणाली के रूप में कार्य करते हैं। पर्यावरण के सूक्ष्म परीक्षण में संगठन के आन्तरिक तथा वाह्य परीक्षण के अन्तर्गत वातावरण में व्याप्त अवसरों तथा खतरों का अध्ययन किया जाता है, और वातावरण के आन्तरिक विश्लेषण में संगठन की शक्ति तथा कमजोरियों का अध्ययन किया जाता है जो यह निश्चित करती है कि प्रत्येक व्यवसायिक संस्था किस सीमा तक व्याप्त अवसरों तथा खतरों का लाभ उठा सकती है। आन्तरिक तथा वाह्य वातावरण को एक साथ लेते हुए SWOT विश्लेषण की कड़ी पूरी बनती है। इसमें यह जानने का प्रयास किया जाता है कि वाह्य वातावरण जोकि अनियंत्रित होता है वह संगठन पर किस प्रकार प्रभाव डालता है?

व्यवसायिक पर्यावरण का विश्लेषण करने के पूर्व इसके अर्थ को भली–भाँति समझना आवश्यक है। यह दो शब्दों व्यवसाय+पर्यावरण के संयोग से बना है। व्यवसाय का शाब्दिक अर्थ है कि "व्यस्त रहने की अवस्था", परन्तु प्रत्येक मानवीय कार्य की व्यस्तता व्यवसाय नहीं हो सकती। व्यवसाय वही मानवीय व्यस्तता है जिसमें आर्थिक कार्य होते हैं और इसका सम्बन्ध वस्तुओं तथा सेवाओं के उत्पादन, विनिमय तथा उपभोग से होता है। अतः व्यवसाय वह आर्थिक क्रिया है जिसके द्वारा वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन तथा वितरण किया जाता है और इसका उद्देश्य मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि करके लाभ कमाना होता है। पर्यावरण का अर्थ उन परिवर्ती परिस्थितियों, प्रभावों तथा शक्तियों से है जो सामाजिक तथा सांस्कृतिक दशाओं के समूहों के रूप में (जैसे– रीति रिवाज, भाषा, कानून, धर्म, आर्थिक व राजनीतिक संगठन) किसी व्यक्ति अथवा समुदाय के जीवन को प्रभावित करते हैं।

व्यवसायिक पर्यावरण उपरोक्त दोनों शब्दों की परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि "एक व्यवसाय संगठन का अस्तित्व शून्य में नहीं होता इसका अस्तित्व स्थानों, वस्तुओं, प्राकृतिक साधनों तथा महत्वपूर्ण सिद्धान्तों एवं जीवित व्यक्तियों से निर्मित होता है। इन सब तत्वों एवं शक्तियों के योग को ही व्यवसायिक पर्यावरण कहते हैं।" सरल शब्दों में व्यवसायिक पर्यावरण को बाह्य घटकों के समूह के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसके अन्तर्गत

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-2) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, सरकारी, वैधानिक, जनांकिकीय तथा प्राकृतिक घटक सम्मिलित हैं। इन घटको को नियंत्रित नहीं किया जा सकता और ये व्यवसायिक निर्णयों को प्रभावित करते हैं।

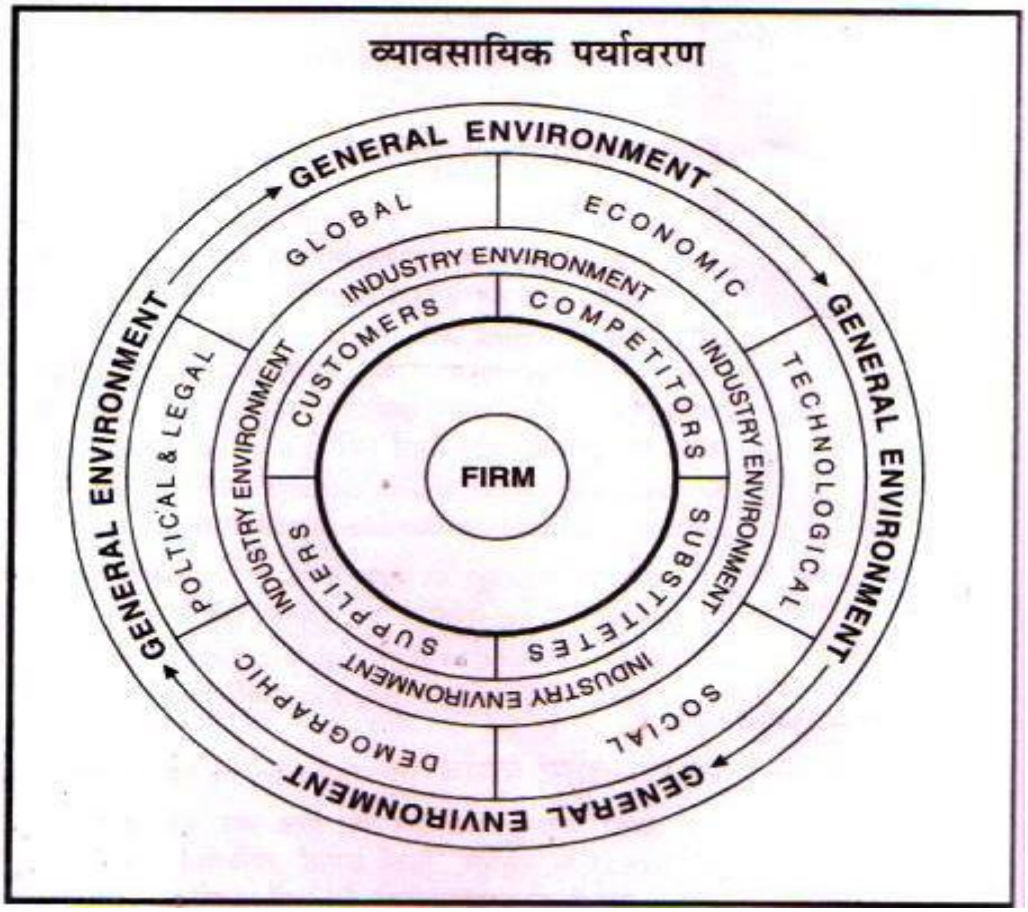

उद्देश्य

वर्तमान समय में व्यवसायिक जगत की विभिन्न बाधक शक्तियों का निराकरण करने के लिए व्यवसाय प्रारम्भ करने के पूर्व कार्यनीतिक प्रबन्ध किया जाना चाहिए। कार्यनीतिक प्रबन्ध के विभिन्न पहलू हैं, जिन पर पूरी सावधानीपूर्वक व गहनता के साथ विचार करके व्यावसाय के सम्बन्ध में कोई निर्णय लिया जाता है। कार्यनीतिक प्रबन्ध लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए कार्यों को चुनने का विस्तृत कार्यक्रम है तथा उद्देश्यों एवं संगठन के वातावरण से सम्बन्धित संसाधनों को विभाजित करने का एक तरीका है। यह उद्देश्य पूर्व कार्यों को करने का एक तरीका है। कार्यनीति में जिन विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया जाता है। उसमें प्रबन्ध प्रक्रिया के व्यवसायिक वातावरण का विश्लेषण प्रमुख है। व्यवसायिक वातावरण व्यवसाय के प्रगति में उल्लेखनीय भूमिका निभाता है।

पर्यावरण का विश्लेषण या सूक्ष्म परीक्षण का अर्थ

पर्यावरण के सूक्ष्म परीक्षण के अन्तर्गत लगातार आर्थिक, प्रतियोगी, तकनीकी, सामाजिक–सांस्कृतिक, जनसंख्या सम्बन्धी तथा राजनैतिक शक्तियों का अध्ययन किया जाता है, जो व्यवसायिक संस्थानों के लिए अवसर तथा खतरों का निर्धारण करती हैं।

पर्यावरण का सूक्ष्म परीक्षण केवल एक बार नहीं होता, बल्कि निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, जैसे कि वातावरण में लगातार परिवर्तन होता रहता है, इसलिए कार्यनीतिज्ञ निरंतर इसका विश्लेषण करते हैं तथा समाधान ढूँढते रहते हैं। वातावरण विश्लेषण एक विधि या प्रक्रिया है, जिससे वातावरण सम्बन्धी बातों की जानकारी मिलती है ताकि अवसरों एवं खतरों को मापा जा सके। वातावरण निदान से उनका तात्पर्य प्रबन्ध निर्णय से है, जिसे वातावरण के विश्लेषण के आधार पर निर्धारित किया जाता है।

पर्यावरण विश्लेषण एक विश्लेषणात्मक एवं समन्वयात्मक प्रक्रिया है। विश्लेषण करने के लिए हम इसे कई छोटे–छोटे भागों में बांट देते हैं ताकि सूक्ष्मातिसूक्ष्म जाँच हो सके, जबकि समन्वय में बांटे गये भागों/अनुभागों को एक साथ मिलाना या जोड़ना होता है। जब विश्लेषण करते हैं तो उसमें न केवल प्रत्येक मिनट की क्रियाओं पर विचार किया जाता है बल्कि सम्पूर्ण रूप में सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक तथा अन्य पहलुओं को बड़े ही शुद्ध रूप में लिया जाता है।

पर्यावरण के सूक्ष्म परीक्षण की आवश्यकता

पर्यावरण परीक्षण क्यों महत्वपूर्ण है? और व्यवसायिक इकाई के लिए क्यों अत्याधिक आवश्यक है?

ग्रीनीयर तथा डी. नोरबर्न के द्वारा यू.के. की 21 कम्पनियों में कार्यनीति नियोजन पर शोध में "कुछ ऐसे प्रमाण मिले–कि जिस कम्पनी में वातावरण का सूक्ष्म परीक्षण होता है, उसके वित्तीय कार्य सम्पादन में वृद्धि हो जाती है।"

लॉरेन्स आर. जॉक तथा विलियम एफ. गुलीक इस बात पर जोर देते हैं कि, "1918 और 1988 के बीच 70 वर्षों में अमेरिका की जिन 100 बड़ी फर्मों में से आधी फर्मों ने व्यवसाय छोड़ दिया था, समाज के लिए उनकी महत्ता काफी कम हो गयी। प्रायः ऐसा होता है कि कम्पनियाँ अपने आप को ऐसा समझने लगती हैं कि उनकी हार कभी नहीं होगी। इस भ्रम में पड़कर वे सोचने लगती हैं कि विश्व बाजार में होने वाली क्रियाओं की जांच की आवश्यकता उन्हें नहीं है। जब कम्पनी पर्यावरण के साथ अपने आपको समायोजित नहीं कर पाती या बदलते हुए परिवेश में अपनी कार्यनीतियों में संशोधन नहीं करती, तो वह अपने उद्देश्यों को पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं कर सकती।"

पर्यावरण के सूक्ष्म विश्लेषण के निम्नलिखित कारण है–

वर्तमान पर्यावरण के बारे में स्पष्ट धारणा का ज्ञान

पर्यावरण परीक्षण के द्वारा व्यवसायिक वातावरण में कितने प्रतियोगी हैं, उनकी क्या योजनाएं हैं? लेनदारों तथा सरकार की क्या नीतियाँ हैं तथा ग्राहकों की प्राथमिकताओं एवं अभिरूचियों, कर्मचारी संघों की माँग, तकनीकी खोज आदि का ज्ञान हो पाता है। इन तत्वों के ज्ञान से निश्चित रूप में सही कार्यनीति के चुनाव में सहायता मिलती है जो वातावरण के अनुकूल होती है।

प्रभावशाली कार्यनीति

बाजार के व्यापक अध्ययन से ग्राहकों की पहचान, उनकी अपेक्षाओं तथा आकांक्षाओं की जानकारी मिलती है, तथा प्रतियोगिता के लिए जगह बनती है। इस प्रतियोगिता का आधार मूल्य, सेवाएँ या तकनीकी विकास हो सकता है। बाजार के सही ज्ञान से कम्पनी वातावरण के अनुसार अपनी कार्यनीति तय करती है।

अवसरों तथा खतरों की पहचान

अवसर वे तत्व होते हैं जिनसे कम्पनी को अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में रूकावट के रूप में जाने जाते हैं। प्रबन्ध वातावरण सम्बन्धी पूर्व ज्ञान तथा अपनी दूरदर्शिता से इन अवसरों एवं खतरों की पहचान कर सकता है।

भविष्य का अनुमान

पर्यावरण के सूक्ष्म परीक्षण द्वारा विभिन्न तत्वों के बीच गतिशील एवं निरंतर बदलती हुई परिस्थितियों में भविष्य के बारे में अनुमान लगाया जा सकता है। इस प्रकार जो अदृश्य है उसे पूर्वानुमान द्वारा देखा जा सकता है, तथा अनिश्चितता बिल्कुल कम रह जाती है। विभिन्न परिस्थितियों में सम्भावित फल की आशा होने लगती है, जिसके फलस्वरूप संगठन किसी भी अनिश्चित तथा अप्रत्याशित घटना का सामना करने के लिए तैयार हो जाता है।

निष्कर्ष

व्यवसाय को सफलतापूर्वक प्रारम्भ करने के लिए, चलाने, लाभप्रद बनाने तथा लागत को कम करके अत्यधिक उत्पादन करने के लिए कार्यनीतिक प्रबन्ध प्रक्रिया के कुछ एक पहलूओं पर ध्यान देने के अतिरिक्त यदि व्यायवसायिक वातावरण पर भी ध्यान दिया जाता है तो निःसंदेह व्यावसाय अपने पूर्व निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त कर सकेगा। उपरोक्त विश्लेषण में यह स्पष्ट रूप से स्पष्ट किया गया है सफलता का मापदण्ड व्यवसायिक वातावरण पर अत्यधिक निर्भर है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

C.B. Gupta (2016), Business Environment, Sultan Chand & Sons, New Delhi, p.g.-43.

C.N. Sontakki & R.K. Gupta (2006), Strategic Management, Kalyani Publisher, New Delhi, p.g.- 116, 134-135.

Charles W.L. Hill, Rohit Mehtani (2018) : International Business, Mc Graw Hill, Education, p.g. 66.

Dr. V.C. Sinha (2015), Business Environment, SBPD Publishing House, Agra, p.g.-38.

J. David Hunger, Thomas L. Wheelen (2014) : Essentials strategic management, p.g. 42-43.

M.B. Shukla (2012), Fundamental of Business Environment, Tax Mann Publication Pvt. Limited, New Delhi, p.g. 132-133.

Reinecke & Schoell (1974), Introduction of Business, Allyn & Bacon, p.g.-63.